टिप्पणी

3

सैन्य प्रकृति

आपने अब तक यह पढ़ा कि प्राचीन भारत में किस प्रकार सेना को एक छोटी इकाई (पट्टी) से विशाल सेना में संगठित किया गया। जिसमें सैकड़ों हाथी, रथ, घुड़सवार, तलवारबाज तथा पैदल सैनिक शामिल होते थे। इस विशाल सेना की देखभाल के लिए रसद अधिकारी 'Commissariat' की जरूरत होती थी। इस रसद अधिकारी का कार्य भोजन, कपड़े तथा जरूरत का सामान पहुंचाने का था। प्राचीन भारत में नौसेना एवं जहाज होने के कारण इस सेना में भी अधिकारी नियुक्त होते थे। इस प्रकार की सेना में अनुशासन और राजा के प्रति वफादारी आवश्यक थी। सेना का नियमित प्रशिक्षण तथा युद्धाभ्यास होता था। आपने युद्ध कौशल और व्यूह रचना का अंतर तो पढ़ा ही है।

प्रस्तुत पाठ में हम सैन्य प्रकृति के बारे में पढ़ेंगे। सैन्य प्रकृति से तात्पर्य है प्राचीन सेना द्वारा युद्ध रीति और युद्ध अस्त्रों को प्रयोग करना। सैन्य प्रकृति का अर्थ है कि कोई सैनिक अथवा इकाई युद्ध या सार्वजनिक स्थान पर किस प्रकार का व्यवहार करती है। उदाहरण के लिए एक सैनिक अनुशासित तथा ईमानदार होना चाहिए। सेना को राजभक्त तथा राजा के प्रति वफादार होना चाहिए। प्रस्तुत पाठ में आप सेना के मुख्य रीति-रिवाज जैसे युद्ध के मैदान में ध्वज लेकर चलना, सैन्य संगीत का प्रयोग तथा सैनिकों द्वारा प्रदर्शित साहस तथा पराक्रम बारे में जानेंगे। विश्व भर में सेनाएं इनमें से कुछ रीति-रिवाजों को मानती हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में ध्वज का महत्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- युद्ध में सैनिकों के लिए सैन्य संगीत के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- भारतीय सैनिकों की वीरता का वर्णन कर सकेंगे।

3.1 ध्वज

ध्वज को एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में पहचाना जाने लगा था और राजाओं द्वारा ध्वज को राज चिन्ह के रूप में युद्ध में ले जाया जाता था। ध्वज को पताका भी कहते थे तथा यह राजा व सेना की पहचान होती थी। ऋग्वेद के समय से ध्वज का प्रयोग सम्मान और राजभक्ति के

चिन्ह के रूप में किया जाता रहा है। आज भी हर भारतीय के लिए 'तिरंगा' महत्व रखता है। कवियों ने भी ध्वज को राजाओं से ज्यादा सम्मान दिया है। ध्वज को राष्ट्रीय सम्मान और गर्व के रूप में देखा जाता है।

ध्वज वाहक ध्वज को युद्ध के मैदान तक ले जाते थे। यह ध्वज सम्मान और शौर्य का प्रतीक होता था। युद्ध लड़ने वाली सेनाओं के लिए यह आवश्यक था कि वह अपने विरोधी के झंडे पर कब्ज़ा कर लें क्योंकि झंडा विजय का प्रतीक माना जाता था। यहाँ यह भी याद रखना आवश्यक है कि प्राचीन समय में हर राजा का अपना एक झंडा होता था तथा सेना की हर इकाई का भी अपना अलग झंडा होता था। यह झंडा हाथी अथवा रथ पर ले जाया जाता था।

झंडे के अलावा राजा प्रतीकों का प्रयोग करते थे। यह प्रतीक जानवरों पर आधारित होते थे जैसे शेर, सूअर आदि। दक्षिण भारतीय राजा मछली, चीते व तीर के निशान का प्रयोग ध्वज में करते थे।

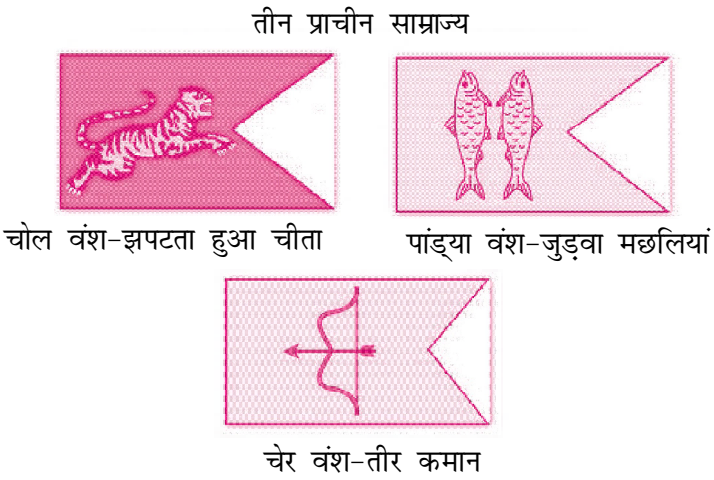

चित्र 3.1 : ध्वज या प्रतीक

ध्वज पर बने चित्र को ही राजचिन्ह अथवा सरकारी मोहर या सिक्के के रूप में प्रयुक्त किया जाता था। छोटी पताका से तात्पर्य एक त्रिकोणीय झंडा है जो कि रथ, तलवारबाजों अथवा हाथियों पर भी प्रयुक्त होता था। ऐसी पताकाएं रंगीन कपड़ों से बनायी जाती थी। इसका कार्य युद्ध के मैदान में दो विरोधी सेनाओं के बीच अंतर स्थापित करना था।

3.2 युद्ध संगीत

ऋग्वेद संहिता में युद्ध में प्रयुक्त अनेक वाद्य यंत्रों के बारे में जानकारी मिलती है। इससे पता चलता है कि संगीत का युद्ध में कितना महत्व होता है। ये वाद्य यंत्र दो ही समय प्रयुक्त होते थे। प्रथम युद्ध में तथा द्वितीय त्यौहार के अवसर पर। वैदिक साहित्य में तीन प्रकार के ढोल अथवा नगाड़ों का वर्णन किया गया है। वाद्य यंत्रों का उपयोग धार्मिक उत्सव, सांस्कृतिक तथा कला का प्रदर्शन करने के लिए किया जाता था। कुछ वाद्य यंत्र विशेष रूप से युद्ध के लिए

बनाए जाते थे। ये वाद्य यंत्र सैनिको के लिए क्यों आवश्यक थे? वस्तुत: ढोल और संगीत सैनिकों को शौर्य और वीरता से लड़ने की प्रेरणा देते हैं।

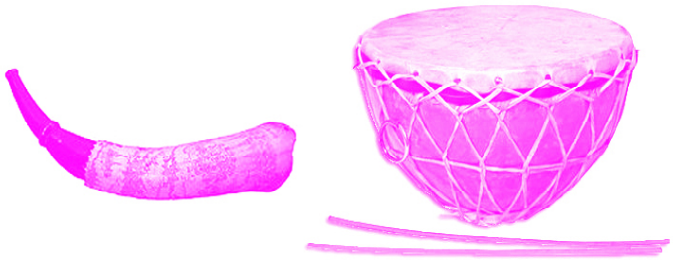

चित्र 3.2 : युद्ध, ढोल, बिगुल या नगाड़ा

दुंदुभि नामक वाद्ययंत्र का प्रयोग सैनिकों को प्रात:काल जगाने के लिए किया जाता था। साथ ही इसकी प्रस्तुति शाम को उस दिन के युद्ध समाप्ति या निर्धारित समय पर युद्ध आरंभ करने की घोषणा के लिए होता था। शंख का प्रयोग भी मुख्यत: युद्ध में किया जाता था। समय के साथ-साथ शंख का प्रयोग कम होता गया और तुरही का प्रयोग बढ़ता था।

विश्व की सभी सेनाएं आज भी सैन्य बैंड, तुरही तथा बिगुल को अपनी सेना का अंग मानती हैं। भारतीय सेना की पैदल ईकाई में एक बैंड दस्ता है जिसका उपयोग सैनिकों को प्रेरित करने तथा मार्चिंग में प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से किया जाता है। युद्ध के समय यह बैंड चिकित्सा सहयोगी के रूप में कार्य करता है। इनका कार्य घायल सैनिकों को अस्पताल पहुंचाना होता है।

3.3 वीरता और शौर्य

भारत के लोग भारतीय सैनिकों को सीमा के सजग सुरक्षा प्रहरी के रूप में देखते हैं। एक भारतीय सैनिक साहस, आत्म बलिदान, सत्य निष्ठा, गौरव तथा देश के प्रति समर्पण जैसे गुणों का प्रदर्शन करता है। राष्ट्र का यह कर्त्तव्य है कि वह सैनिक के बलिदान को पहचाने तथा उसका सम्मान करें। सेना का शौर्य प्राचीन काल से विख्यात है।

सैनिकों के शौर्य का कविताओं के माध्यम से भी गुणगान किया गया है। यह कविता प्राचीन काल के इतिहास का प्रमाणिक स्रोत है। माताएँ अपने पुत्रों को सेना में भाग लेने के लिए प्रेरित करती हैं। कुछ महिलाओं को अपने पति की युद्ध में मृत्यु होने के बाद भी अपने पुत्रों के सेना में शामिल होने पर गर्व होता था। यह उनका अपने राज्य के लिए किया गया अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य होता है।

यह भी कहा जाता है कि एक सैनिक में चार मुख्य गुण होने चाहिए। ये गुण हैं- शौर्य, सम्मान, गर्व एवं तीक्ष्ण बुद्धि।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. युद्ध के मैदान में ध्वज का वहन कौन करता था?
2. किन्हीं तीन जानवरों के नाम लिखिए जिनका उपयोग ध्वज या राजचिन्ह के रूप में किया जाता था?
3. किन्हीं तीन युद्ध वाद्य यंत्रों के नाम लिखिए।

आपने क्या सीखा

- एक सुव्यवस्थित व संगठित सेना को रीति रिवाजों एवं परंपराओं का पालन करना होता है ताकि वे प्रेरणा और वीरता के साथ लड़ सकें।
- हर रीति-रिवाज का अपना महत्व है। इसी कारण युद्ध के मैदान में यह आवश्यक होती है।
- ध्वज या झंडा, सैन्य संगीत और वाद्ययंत्र सेना का एक अंग है तथा युद्ध का महत्वपूर्ण प्रतीक होते हैं।
- किसी भी राज्य का ध्वज व राज चिन्ह उसकी पहचान होते थे जिन्हें झंडे, सिक्के या कलाकृतियों के रूप में बनाया जाता था।
- भारतीय सैनिकों का शौर्य किसी से कम नहीं था। सैनिकों की माताएं व पत्नियाँ भी वीरांगनाएं थीं। अपने पति की मृत्यु के बाद भी वह अपने पुत्रों को सेना में भेजती थीं। यह बात कविताओं में भी कही गयी है।

पाठांत प्रश्न

1. झंडे और पताका में क्या अंतर है?
2. युद्ध के मैदान में दुंदुभि अथवा युद्ध ढोलों को बजाने का क्या उद्देश्य था?
3. एक अच्छे सैनिक के महत्वपूर्ण गुण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. ध्वजवाहक
2. मछली, शेर, बाघ तथा तीर
3. युद्ध ढोल, नगाडा, शंख, दुंदुभि